नाम- डॉ. प्रदीप कुमार राय
एसो. प्रोफेसर, रोहतास महिला कॉलेज, सासाराम।
विषय- राजनीति शास्त्र
कक्षा - बी. ए. (प्रतिष्ठा) पार्ट-03
पेपर - 08
दिनांक - 30.05.2020

टॉपिक - भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में उग्रवाद (उग्र राष्ट्रीयता) के उदय के कारण — (भाग-1)

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में उग्रवाद अथवा उग्र राष्ट्रीयता उस विचारधारा एवं वर्ग से संबंधित है जो पूर्ण स्वतंत्रता की मांग तथा उसकी प्राप्ति हेतु जन आंदोलन के मार्ग पर प्रगतिशील हुई। यह वस्तुतः 1885 से 1905 की अवधि में घटित विभिन्न घटनाओं के साथ-साथ परिस्थितियों एवं शक्तियों का स्वाभाविक परिणाम था। इसके उदय के कारणों का उल्लेख निम्न प्रकार से किया जा सकता है—

(1.) सन् 1892 ई. के सुधार कानून की अपर्याप्तता — 1892 ई. का भारतीय परिषद् अधिनियम कमियों एवं त्रुटियों से पूर्ण था। निर्वाचन व्यवस्था का त्रुटि पूर्ण होना, इसके कार्य एवं अधिकार की सीमितता, वर्गों और प्रांतों को प्रतिनिधि भेजने में भेदभाव, हितों में भेदभाव आदि से राष्ट्रीय कांग्रेस में असंतोष पनपा। परिणामस्वरूप कांग्रेस में एक ऐसे वर्ग का जन्म हुआ जो क्रमिक सुधार के स्थान पर आधारभूत परिवर्तन की दिशा की ओर अग्रसर होने लगा।

(2.) उदारवादियों की पद्धति से असंतोष — उदार राष्ट्रवादियों द्वारा अपनाये गये 20 वर्ष के साधनों के परिणाम निराशाजनक ही सिद्ध हुये। लाला लाजपत राय के शब्दों में, उन्हें रोटी के स्थान पर पत्थर ही प्राप्त हुये। परिणामतः उन्होंने निश्चय किया कि जन-आंदोलन को ऐसा रूप दिया जाये जिससे कि नौकरशाही उनकी बात मानने को बाध्य हो जाये।

Scanned with CamScanner

(2.) धार्मिक पुनर्जागरण आन्दोलन और राष्ट्रीय जागरण

धार्मिक पुनर्जागरण आन्दोलन और सांस्कृतिक जागरण के परिणामस्वरूप लोगों में भी एक नई चेतना का जन्म हुआ। लोग भारतीय धर्म, साहित्य, सांस्कृतिक परम्पराओं व भारत और भारत के गौरवशाली अतीत की जानकारियों से परिचित हुये। इन सब आन्दोलनों से धार्मिक सुधार हुये और विदेशी शासन को भारतीय हित के विरुद्ध घोषित करने लगे। स्वामी

(3.) विवेकानंद का 1893 के शिकागो धर्म सम्मेलन में हिन्दू धर्म का गौरवपूर्ण भाषण, अरविन्द घोष का हिन्दुत्व पर विचार, तिलक का हिन्दू ग्रन्थों और उत्सवों पर बल, विवेकानन्द क्रान्तिकारी भावना, प्रेरणा एवं लोकजागरण के योगदान रहे।

(4.) प्राकृतिक प्रकोप और शासन की असंवेदनशील नीति

19वीं सदी के उत्तरार्द्ध में भारत में भीषण प्राकृतिक प्रकोप हुये। 1876–1900 तक भीषण अकालों से 25 वर्षों में देश में 18 अकाल पड़े। जिनमें सबसे विकट 1896–97 का अकाल था। किन्तु शासन द्वारा किया गया राहत अपर्याप्त, उदासीन एवं धीमा था वहीं भारत सरकार रानी विक्टोरिया का उत्सव मनाने में व्यापक धन व्यय कर रही थी। इससे स्वदेशी शासन के भाव को प्रेरित किया। बम्बई प्रांत के इतिहास में भारी प्लेग से निपटने में भी तत्कालीन प्रशासन निष्क्रिय, निर्दयी एवं असंवेदनशील थे।

(5.) निष्ठुर व्यवहार और जातीय भेदभाव – अंग्रेजों का भारतीयों के प्रति व्यवहार घृणास्पद, निष्ठुर और कठोर था। जहाँ अंग्रेज सैनिकों के अपराध के प्रति साधारण दंड ही जाता था या उन्हें छोड़ दिया जाता था वहीं भारतीयों को कठोर दण्ड एवं काफी यातना दी जाती थी। इस प्रकार की नस्लीय एवं जातीय भेदभाव उजागर किया जाता था। अंग्रेज भारतीय सैनिक भी भारतीयों को ये निम्न जाति शब्द एवं निंदनीय शब्दों का प्रयोग करते थे जैसे- ब्लडी, डी.ई., गुलाम, दास जाति आदि। इन शब्दों से उग्र राष्ट्रीयता को बल मिला। (शेष)

Scanned with CamScanner